International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 31-07-2025, Accepted: 30-08-2025, Published: 15-09-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 14-21

जौनसारी भाषा का संवर्धन व उन्नयनः अनाउणे के सन्दर्भ में

रीता शर्मा, डॉ० शुभा मटियानी
हिंदी विभाग, डी० एस० बी० परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
जौनसारी भाषा एवं उसका साहित्य बहुत ही कम मात्रा में उपलब्ध है। इसी दृष्टि से इस भाषा का सम्बर्द्धन एवं संरक्षण आवश्यक है तथा जौनसारी लोकसाहित्य को लिपिबद्ध कर इसे भावी पीढ़ी तक पहुँचाया जा सकता है, क्योंकि पलायन शिक्षा, चिकित्सा एवं रोजगार के कारणों से लोग इस अंचल–विशेष से पृथक हो गये है, और जौनसारी भाषा जन व्यवहार से दूर होती जा रही है, अर्थात इस भाषा का प्रचलन धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। वर्तमान पीढ़ी के लोग अपने बच्चों के साथ क्षेत्रीय भाषा में वार्तालाप करने में असहज महसूस करते है अर्थात जौनसारी भाषा में बातचीत करने में शर्म महसूस करते हैं और अपनी भाषा–बोली को अगली पीढ़ी को हस्तानरित नहीं करते हैं जिसके कारण धीरे–धीरे यह भाषा विलुप्तिकरण की ओर अग्रसर हो रही है । प्रस्तुत शोध पत्र जौनसारी भाषा के संवर्धन व उन्नयन सन्दर्भ में है जिसमे जौनसार क्षेत्र के महत्वपूर्ण अनाउ.ो का संकलन किया गया है द्य इस शोध में जौनसार के क्षेत्र का अध्ययन किया गया जिसमे स्थानीय लोगों से अनाउ.ो के सन्दर्भ में जानकारी ली गयी द्य जिसमे चार सौ से अधिक अनाउणे का संकलन किया गया इस शोध का उदेश्य जौनसारी भाषा का संबर्धन व संरक्षण करना है ।

मूल शब्दः जौनसारी भाषा, संवर्धन एवं संरक्षण, लोकसाहित्य, विलुप्तिकरण

भाषा विचार विनिमय का यह सर्वसुलभ साधन है, जिसके द्वारा हम अपने भावों विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं तथा दूसरों के भावों– विचारों को ग्रहण करते हैं इसलिए भाषा समाज की वह अमूल्य निधि है, जिससे सम्पूर्ण समाज के गूँगेपन को अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। भारत एक विविधता वाला राष्ट्र है । यहाँ पर अनेकानेक भाषा एवं बोलियाँ बोली जाती है इसलिए इस सन्दर्भ हेतु यह उक्ति सटीक चरितार्थ होती है कि **"**कोस कोस में पानी बदले, चार कोस पर बानी**"** भाषा बोली के इन नानारूपों में उत्तराखण्ड राज्य के जनपद देहरादून के अन्तर्गत स्थित जनजाति क्षेत्र जौनसार अपनी मौलिक संस्कृति और भाषा की अनमोल विरासत के लिए विश्व के मानचित्र पर विख्यात है किसी भी देश जाति एवं समाज की वास्तविक पहचान उसके साहित्य, संस्कृति एवं कला द्वारा होती है। साहित्य, संस्कृति और कला के साथ–साथ समाज का क्रमिक विकास होता है। और इन सब के लिए हमे भाषाश्रित होना पड़ता है क्योंकि भाषा ही हमारे सम्पूर्ण विकास यात्रा को अभिव्यक्ति प्रदान करती है और उसे जन जन तक पहुंचाती है। इस अध्ययन का उद्देश्य जौनसारी भाषा का सम्बर्द्धन करना व जौनसारी–बावरी भाषा अनाउणे का **संकलन,** सम्बर्द्धन व **संरक्षण** करना है जौनसारी भाषा एवं उसका साहित्य अल्प मात्रा में उपलब्ध है। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि आजकल के अभिभावक अपने बच्चों को जौनसारी–बावरी भाषा में बातचीत करना तो दूर जौनसारी लोकगीतों को भी सुनना एवं सिखाना भी पसंद नहीं करते हैं अपितु अंग्रेजी भाषा की कविताएं एवं अंग्रेजी भाषा मे संवाद करने में स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं और बचपन से ही बच्चों को मोम, डेड, ग्रांटफादर, ग्रांटमदर आदि अंग्रेजी भाषा को संस्कार के रूप हस्तारित करने में स्वयं के सभ्य समाज के प्रतिष्ठित नागरिक समझते हैं। यद्यपि जौनसारी भाषा को हम यह तो नहीं मान सकते है कि अत्यंत संकटग्रस्त है लेकिन असुरक्षित जरूर है, अभी दो पीढ़ियां इस भाषा का प्रयोग व्यवहारिक रूप से कर रही है लेकिन भविष्य में केवल यह भाषा केवल एक पीढ़ी तक ही सीमित रह जायेगी और धीरे धीरे अगली पीढ़ी तक समाप्त हो जायेगी। इसलिए इस भाषा का सम्बर्द्धन एवं संरक्षण करना अत्यंत वांछनीय है।

भाषा किसी भी संस्कृति की पोषक होती है भाषा ही संस्कृति को जीवंत रूप प्रदान करती है। भाषा संस्कृति का वह प्राथमिक तत्व है जिससे संस्कृति विकास पथ पर अग्रसर होती है, यदि भाषा ही विलुप्त हो जायेगी तो संस्कृति भी विलुप्त हो जायेगी। भाषा ही सम्पूर्ण समाज को अभिव्यक्ति प्रदान करती है चाहे वह भले ही मौखिक रूप में व्यवहार में हो। भाषा ही समाज की पहचान होती है भाषा से ही यह ज्ञात होता है कि अमूक व्यक्ति अमूक समाज से सम्बन्धित है, जौनसारी बावरी भाषा से ही हमें जौनसारी समाज की पहचान दिलाती है। यदि जौनसारी भाषा विलुप्त हो जायेगी तो हमारी संस्कृति, समाज, साहित्य सब कुछ विलुप्त हो जायेगा। इसलिए उसके सम्बर्द्धन, संरक्षण एवं उन्नयन का अत्यंत महत्व है ताकि इस भाषा के संबर्धित संरक्षित एवं लिपिबद्ध कर भावी पीढ़ी को हस्तांतरित किया जा सके। भाषा तभी तक जीवित रहती है जब एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को तथा इसी पीढ़ी तीसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करती रहें।

इस शोध में जौनसार के क्षेत्र का अध्ययन किया गया जिसमे साक्षात्कार शोध प्रविधि के माध्यम से क्षेत्रीय भ्रमण कर स्थानीय लोगों से अनाउ.ो के सन्दर्भ में जानकारी ली गयी द्य जौनसार क्षेत्र के महत्वपूर्ण अनाउ.ोरू जौनसार क्षेत्र में 350 सौ से अधिक अनाउ.ो का संकलन किया गया जिसमे से प्रमुख अनाउ.ो व उनका भावार्थ निम्न है

1. माँ और मातड़ोग सबुक लागं आछो (भावार्थः माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है)
2. आछा जाऊं त बाबा का कचला जाअं त ईजा का –(भावार्थः माँ तो प्यार हीं करेगी बेटा चाहे अपराधी हो)
3. चमासै मुँझ ना लेंणै बलै गोरु जातरू मौणं मुँझीं ना लेंणी जोरू (भावार्थः बनावटी चीजों की तरफ आकर्षित नहीं होना चाहिए, ये कहावत आज के मनुष्य के बिल्कुल उलट है)
4. ताऊँखै भैजना था बै शंगड़ियाटी के जड़िक (भावार्थः उचित और आवश्यक कार्य में सुस्ती बरतने वाले व्यक्ति के लिए) (आलसी इंसान तरक्की नहीं कर सकता)
5. गणदै गणदै आपड़ी ईजी भी डाग जाअं (भावार्थः छोटी छोटी बातों पर बहस करने से विवाद भी हो सकता है)
6. दुसा बलै रोया झोया पाछा आशै दोया (भावार्थः समय का दुरूपयोग करने वाले इंसान को जब दिन का बचा काम रात को करना पड़ता है)

7. आपड़े दारकै कुकुर भी मोढ़ जाअं (भावार्थः अपने क्षेत्र में कमजोर और नासमझ व्यक्ति भी वर्चस्व दिखाता है)
8. बाबा की खाई बैटा दैअं (भावार्थः पिता के न रहने के बाद लेन देन का दायित्व बेटे का बनता है)
9. बलै हाथु धोई करी प रा पड़ी (भावार्थः सारे काम छोड़कर एक हीं काम के पीछे लग जाना)
10. बलै भोवै काम ना आथीं बलै बोधौ की खाँन कनाओ (भावार्थः उस काम में लग जाना जिस काम की हमें आवश्यकता ही न हो)
11. बलै जो हैरला पूशे दूध तेसिक अकल ना बुद्ध (भावार्थः पशुओं में दूध की मात्रा इस महीने में सबसे ज्यादा घटती है)
12. काचौ माछी का बलै कोढ़ और काचौन मौसं का मोढ़ (भावार्थः जौनसार में ऐसी मान्यता है कि कच्चा मांस खाने से पुरूष का शरीर सुडौल हो जाता है और कच्ची मछली का सेवन करने से कुष्ठ रोग हो जाता है)
13. बीशियारिया कै हाथौ को खांईऐं पर फकियारिया कै हाथौ को ना खांईऐं (भावार्थःऐसे व्यक्ति से मदद नहीं लेनी चाहिए जो बाद में दी गई मदद का जिक्र करे या दान में दी गई चीज वापस मांगता हो)
14. जो आग घुटला सो अंगार नी हगदा (भावार्थः अगर आप किसी के प्रति बुरा करोगे तो उसके नकारात्मक परिणाम आपको भी भुगतने पड़ सकते हैं, इसका मतलब आग निगलना नही है)
15. एकी का बाबा हआ ओढारौ पुंढा नैणा (भावार्थः अगर हम अपने माता पिता की सेवा नहीं करेंगे तो हमारे बच्चे भी हमारी सेवा नहीं करेंगे)
16. घास जो खाओ प ग्वाँणोई भी खाई (भावार्थः बेईमानी के बाद बेईमानी करना या किसी का दोहरा नुकसान करना)
17. भाव और मोत का पता हंईं ना (भावार्थः महँगाई बढ़ने घटने और मौत का सही अंदाजा कोई नहीं लगा पाता)
18. आपड़ी बलै औलाद और ओरूकै डोखरै पुंढ की फसल सभियांऐं मानं आछी (भावार्थः दूसरों के खेत में लहलहाती फसल और अपने बच्चे सबको प्यारे लगते हैं) (इस बात में सौ प्रतिशत सच्चाई है)
19. लपकी छपकी छोड आपड़ी डोखुटी गोड (भावार्थः दूसरों की निन्दा न करना सिर्फ अपने काम पे ध्यान देना)
20. बलै ताऊँखै का मरदिया बक्तै राखो बोली (भावार्थः किसी व्यक्ति द्वारा अन्तिम समय दिया जाने वाला उपदेश)
21. कुकुर सुँचं एशो जै कबीला चांईं था बड़ा (भावार्थः ज्यादा लाभ के चक्कर में रहना)
22. माँ का बदला बेटी दैअं (भावार्थः माँ की सही प्रकार से सेवा बेटी ही कर सकती है जैसे कपड़े धोना, बाल संवारना आदि) (बेटी घर की लक्ष्मी होती है, और हमारे समाज को एक नई दिशा देती है)
23. जातरा बिची बलै घटूण और बातरा बिची बीज कधी ना हंईं (भावार्थः प्रत्येक काम का एक उचित समय होता है)
24. पईसी कै आगै भूत भी नाचं प (भावार्थः धन के बिना धार्मिक कार्य भी नहीं किये जा सकते हैं क्योंकि वर्तमान में धन दौलत का महत्व ज्ञान और इमानदारी से भी ज्यादा हो गया है) धनं बलवान है, धन से सबकुछ सम्भव है।
25. बलै तैरै का यो लौणी रै बौणी (भावार्थः कृषि कार्य में व्यस्त रहना, कार्य की अति व्यस्वती होना।
26. राखी ना थी तैरै हाथंदी पोटुड़ी देई (भावार्थः गलत काम करने वाले व्यक्ति की मदद कोई नहीं करता ऐसे लोगों की मदद करना भी गुनाह माना जाता है) (सोच समझकर काम करना चाहिए)
27. सुनारौ की बलै ठोक ठोक लोहारौ की एक हीं (भावार्थः सौ सुनार की एक लोहार की, या सौ बात का एक ही जवाब देना) ।
28. कलियार बलै खाई पाऊँ ब्यायाक खैज रं पड़ी (भावार्थः जिस व्यक्ति के पास कमाई का कोई साधन न हो) (ऐसे लोगों की मदद करना सबसे बड़ा धर्म है क्योंकि बेरोजगार व्यक्ति का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है)
29. जादा माच और जादा नाच हंईं ना आछा (भावार्थः सफलता के बाद ज्यादा इतराना भी मनुष्य के लिए हानिकारक हो सकता है)
30. आपड़ी चारला त रजदी (भावार्थः सिर्फ अपनी उन्नति के लिए सोचना चाहिए, कौन है। क्या कर रहा है इन बातों पर ध्यान मत दो)
31. आग चोर भी पकड़ाई दैअं (भावार्थः ये एक लम्बी और पुरानी कहानी है जिसे यहाँ विस्तार से लिखा नहीं जा सकता)
32. तैरै दारकै कुकुर भी आंदा ना (भावार्थः जो व्यक्ति हर चीज देने से मना करता है, ऐसे व्यक्ति के घर कोई भी जाना पसंद नहीं करता हमें कंजूसी नहीं करनी चाहिए) (आपका गलत व्यवहार आपको अकेला छोड़ सकती है।
33. भूखैक बलै सुखा अघाणा अघाईऐंक कुणे अघाणा (भावार्थः जिस व्यक्ति की इच्छा पूर्ण हो चुकी है किसी प्रकार का लालच देकर प्रभावित नहीं कर सकते)
34. नांदरै बाबा का भाझला त घर लांदा (भावार्थः शिष्टाचार मनुष्य को महान बनाता है) (इस कहावत का मतलब मकान बनाना या किसी की गुलामी करना नहीं है)
35. शक की जड़ी आथीं ना (भावार्थः मन का कपट खुद मिटाना पड़ता है, मानसिक कमजोरी का कारण भी बन सकता है ऐसे लोग अपनी परछाई का भी विश्वास नहीं करते)
36. बाबा छोरै बलै मरं ईजा छोरै जीयं (भावार्थः माँ के बिना बच्चों की परवरिश सम्भव नहीं है क्योंकि माँ ईश्वर से भी बढ़कर है)
37. भिदरै बलै गंईणी और आपड़े ईजा कै मागाशो सभियांऐं मानं आछो (भावार्थः अपने माँ के पास और खुले मौसम में सब लोग सुकून पाते हैं) (सूखा पड़ने पर लोग महीनों बारिश का इन्तजार करते हैं लेकिन जब बारिश होती है तो लोग एक दिन का समय भी घर में व्यतीत नहीं कर पाते हैं)
38. आपड़ै भितरै ओरूकीं लागों (भावार्थः अपने घर परिवार में अपने पड़ोसी या दुश्मन की ही चर्चा होती है अगर कोई सुन भी लेता है तो इस बात को गम्भीरता से नहीं लेना चाहिए)
39. सुधरिऐं बाबा की बिगड़िऐं औलाद (भावार्थः जिस बाप ने समाज सेवा करके नाम कमाया हो और उसके बेटे लूट को मार से फुरसत न हो)
40. एक झूठी छुपाणक शौ झूठी पड़ लाणी (भावार्थः एक झूठ छिपाने के लिए सौ झूठ का सहारा लेना, पड़ता है लेकिन इसके बावजूद भी झूठ पकड़ा जाता है, इसलिए किसी भी बात को कहने से पहले अच्छी तरह सोच लेना चाहिए क्योंकि कभी मजाक में बोला गया झूठ भी आपके अपमान का कारण बन सकता है) (झूठ का सहारा कभी नहीं लेना चाहिए)
41. बातु को उधार कधी ना हंईं (भावार्थः तुरन्त और सही जवाब देना, चाहे कोई रिश्ते में बड़ा हो या उम्र में अगर सामने वाला गलत बात करता है) (कुछ लोग अपने बच्चों को मेहमानों के साथ बात करने से रोकते हैं, ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि बड़े से छोटा हीं नहीं बल्कि छोटे से बड़ा भी कुछ सीख सकता है) (हर गलती को सहन करना भी बुरी बात है)
42. आपड़ो बावड़ो बलै रूवाअं बिगानं बावड़ो हसावं (भावार्थः पागल या अपाहिज का मजाक नही बनाना चाहिए क्योंकि अगर आपके परिवार में इस तरह के व्यक्ति ने जन्म ले लिया तो आप कितने चिन्तित होंगे)
43. जै मेहनत करं त पाथरू पांढीं भी पईसै निकड़ं (भावार्थः पैसा कमाने के लिए हिम्मत और मेहनत की जरूरत होती है)

44. एक बलै माँ का ओका मौउँसिया का (भावार्थः समान अधिकार न देना या भेद भाव करना)
45. सुतीऐं और मरीऐं एक हों (भावार्थः सोया हुआ इंसान और मरा हुआ इंसान एक जैसा दिखाई देता है, आप सोए हुए इंसान को लूट या मार भी सकते हैं)
46. क्यारीक और लाड़ीक जेइछोईं फलावलै तेइछोईं जावं आछो (भावार्थः खेत की मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए खाद, पानी और गुड़ाई, निराई की जरूरत होती है, बच्चों के शरीर की संरचना भी कुछ ऐसी ही है, आप बच्चों को पौष्टिक आहार जितना हीं दोगे उनका शरीर उतना ही निरोग रहेगा और दिमाग तेजी से विकसित होगा)
47. गाँवदा भी एक हं कचला भितरै भी (भावार्थः एक बुरा व्यक्ति सम्पूर्ण समाज को कलंकित कर देता है ऐसे व्यक्ति से बचकर रहना चाहिए)
48. बलै मैरा नाना था नूरा बाँढक भला था भितरक बुरा (भावार्थः ये कहावत उस व्यक्ति के लिए है जो परिवार वालों के साथ लड़ाई, झगड़ा और गाँव वालों के साथ प्यार से रहता है)
49. आगै मौढ़ी करो तब फुटोई दैनं (भावार्थः मेहनत से किया गया कार्य खुद बिगाड़ देना)
50. देंदै ना ताऊँखै सुने का डाढु (भावार्थः ऐसी जगह मेहनत करना जहाँ से कुछ लाभ मिलने की उम्मीद न हो) पीठी कनाणौक हई प जांदै (उम्र ढल जाने के बाद शादी करना)
51. राखी ना लेइ रात (भावार्थः पत्नी के साथ अत्याचार करने वाले इंसान के लिए) (महिलाओं के लिए ये कहावत बहुत महत्त्वपूर्ण है) (किसी लड़की को झूठा आश्वासन देकर शादी के लिए तैयार करना पाप है)
52. बलै तैरै का यो बारीआ का जाग (भावार्थः सबसे बड़े पुत्र की शादी रचाना गरीब परिवार के लिए मुसीबत बन जाती है)
53. पढ़े त पढ़े अ पर गुणै ना (भावार्थः पढ़ने लिखने के बाद भी मूर्खी जैसी हरकतें करना)
54. बलै तैं का पूशौ की रात काटी (भावार्थः इस माह में लम्बी रातें और ठण्डा मौसम होता है)
55. आगी लाई करी पाणिक जाअं (भावार्थः आलसी व्यक्ति का मजाक करना)
56. कुकरिया को बाकरिया थालै लावं बाकरिया को कुकरिया थालै (भावार्थः झूठ बोलकर लोगों को ठगना या नम्बर दो के काम में पैसे कमाना)
57. तातै पाथरूच की फावी हंईं ना आछी (भावार्थः जल्दबाजी में लिए गए फैसले गलत साबित हो जाते हैं)
58. अयलै जुगै दैखा पयला जुग भी (भावार्थः कष्ट झेलना) (इस कहावत में जो प्रथम और चौथा शब्द है, ये खत बाना और सिलगांव में प्रचलित है)घीअ मुँझ भौइ भी हं (प्रत्येक काम और वस्तु की गुणवत्ता सौ प्रतिशत सही नहीं होती)
59. तैं भी चमासा राखा खाई (भावार्थः भारी वस्तु उठाने वाले के लिए)
60. कुन्डा बलै हनोड़ भिन्डा थईंनोड़ (भावार्थः जौनसार बावर के दो बड़े धार्मिक स्थल) चित्त भी आपड़ी और पट भी (दोनों तरफ से लाभ की उम्मीद)
61. जूता गोडी पांढा लागं आछा (भावार्थः नकारात्मक सोच और घटिया किस्म के लोगों को उस जगह पर रखो जो स्थान उनके लायक हो) (इस कहावत के और भी कई उदाहरण हैं)
62. आखी पांढी चर्बी रोइ लागी (भावार्थः उस व्यक्ति के लिए जिसने कभी मुसीबत का सामना न किया हो) (ये कहावत आप घमण्डी व्यक्ति के लिए भी कह सकते हैं) कोवै रहिंणादै रं लागी तिल शूखदै रं लागी (समय किसी का इन्तजार नहीं करता) (समय की अपनी एक निर्धारित गति होती है)
63. तैरै हाथंदै भी छोउ रै जाई (भावार्थः काम चोर इंसान का मजाक बनाना) (आलसी व्यक्ति जब इस कहावत को सुनता है तो कुछ जवाब नहीं दे पाता) सात हथी बलै खेती एक हथो भण्डार (खेती का काम आप मजदूरों से भी करवा सकते हैं लेकिन चूल्हा चौका एक औरत ही सम्भाल सकती है) सुखा सूतं कुम्हार जेसकी माटी ना नेइं चोर (जिस व्यक्ति के उपर किसी प्रकार की जिम्मेदारी न हो)
64. लाडै बलै लडाऐ हांडै हगाऐ (भावार्थः अपने बच्चों को अधिक लाड़ प्यार देकर बिगाड़ देना) (कुछ लोग अपने बच्चों को ज्यादा पैसा देकर भी बिगाड़ देते हैं) (परिवार बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है)
65. तीशा जाअं कुऐ डाइ कुआ आँईं ना तीशै डाइ (भावार्थः जिन्हें आवश्यकता है उन्हें खुद प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि सोए हुए शेर के मुँह में हिरन स्वयं प्रवेश नहीं करते)
66. बलै तुम का यो दैव घड़िऐ (भावार्थः दो परिवारों की कट्टर दुश्मनी)
67. बलै जब आय जाणं कै दूस तब पेरो लाड़कटीं मुंडंदो भूस (भावार्थः विनाश काले विपरीत बुद्धि)
68. बलै जाई रो घरूवो (भावार्थः किसी काम से परेशान हो जाना) (हिम्मत हार जाना)
69. बलै हई रोइ समसेली की कथा (भावार्थः हर बात का मतलब उल्टा समझना) (इस कहावत का जन्म भी एक कहानी से हीं हुआ है जो एक व्यक्ति पर आधारित है) (काल्पनिक कहानी)
70. बाँढौ का चोर सुखा जागना भितरौ का अखा (भावार्थः अपने ही परिवार वालों के साथ धोखाधड़ी करने वाला इंसान) (जैसे विभीषण अपने परिवार का सर्वनाश करवाता है और खुद राजा बनता है) (ऐसे लोगों को कुलनाशी कहते हैं) (अपने परिवार की गुप्त बातें परिवार से बाहर नहीं निकलनी चाहिए क्योंकि जो व्यक्ति आज आपका दोस्त है वो कल आपका दुश्मन भी बन सकता है इसलिए हर बात सोच समझकर कहनी चाहिए)
71. खाज कनाई करी फीटं (भावार्थः लाभ हानि का पता काम करने के बाद हीं चलता है) (काम करने के बाद ही पता चलता है कि आखिर इसमें है क्या)
72. बलै आई गोई अक्ली की दाढ़ा (भावार्थः अनुभव प्राप्त करना या किसी काम में कामयाबी हासिल करना)
73. बले का राखै धोई ऐजै ब्याठे शै (भावार्थः चुनाव या खेल में बुरी तरह से पराजित करना)
74. घुघुतिया पांढी हैरं अइंनकुड़ी (भावार्थः छोटी छोटी चीजों में दोष ढूँढना बहुत बुरी आदत होती है)
75. सस्तैक रूणौ बार बार महिंगैक रूणौ एक बार (भावार्थः हर सस्ती चीज नकली भी हो सकती है और सस्ता महँगा भी पड़ सकता है)
76. छौ मिंनै लग पाड़ बिना दूधौ कै (भावार्थः प्रतीक्षा में रखना या किसी काम को टाल देना)
77. लाड़कटी का बलै साथ हांढदुईं पड़ी रात (भावार्थः बच्चों के साथ कहीं लम्बी यात्रा पर जाना और रास्ते में समय बर्बाद करना)
78. लाईंयों के शींग कधी ना हंईं (भावार्थः झूठा भरोसा देना या किसी को गलत काम करने के लिये उकसाना) (ऐसे लोगों से बचकर रहना चाहिए)
79. लागीं ना खटायांदा नावा (भावार्थः जब किसी व्यक्ति के धन दौलत या अन्य प्रकार की चीजों का दूसरों के द्वारा नुकसान किया जाता है)
80. खाटीऐं बलै बस्ती भरिऐं पाणी और धेईंऐं अकल कधी लग हंदी (भावार्थः एक बार कमाया गया धन पूरी जिन्दगी आपका साथ नहीं दे सकता क्योंकि जिस धनराशि के सहारे आप

जी रहे हैं वो कभी भी खर्च हो सकती है इसलिए आपको मेहनत करते रहना चाहिए इसी प्रकार बर्तन में भरा हुआ पानी ज्यादा दिनों तक नहीं रह सकता क्योंकि वो पानी स्थिर रहने के कारण अशुद्ध हो जाएगा) (दूसरे व्यक्ति द्वारा दी गई सलाह तब तक सही हो सकती है जब तक परिस्थिति बदल नहीं जाती इसलिए अपने विवेक से भी काम करना चाहिए)

81. भैड़ै जोगा भैड़ा हं मरदौ जोगा मरद (भावार्थः प्रत्येक शक्ति का तोड़ होता है, जैसे पहलवान से टक्कर लेने के लिए पहलवान और अमीर को चुनौती देने के लिए अमीर)
82. आ बलै काती आधो दुसा आधो राती (भावार्थः इस महीने में लोगों को काम से फुरसत नहीं मिलती)
83. शंगड़ियाटौ का टुकिऐं झेउड़ियाक भी डरों (भावार्थः जो आदमी बुरे वक्त का सामना कर चुका हो, या किसी के द्वारा ठगा गया हो)
84. बाघौ को बलै रजो ना बाकरिया को हारचो ना (भावार्थः धर्म और न्याय कभी पराजित नहीं होता क्योंकि दुनियाँ ने हमेशा अहिंसा का समर्थन किया है)
85. सीधा माटीया का माधु (भावार्थः शान्त रहने वाले इंसान के लिए) (इस तरह के लोग कट्टर स्वभाव के होते हैं)
86. बलै बाकरी, बाकरी घाटी का फाईदा चिता (भावार्थः ऐसा काम करना, जिससे न लाभ हो न हानि)
87. बस्ती प बिगानी धैर जो आपड़ी अ (भावार्थः जरूरत से ज्यादा भोजन करने वाले इंसान के लिए) (अगर कोई अपने घर में भोजन कर रहा है तो ये कहावत आप नहीं कह सकते हैं)
88. आगै लाई लाई पछारिया उपाढ़ी खाई (भावार्थः अपने ही किए काम को बिगाड़ देना) (ये कहावत एक पहेली का काम भी करती है)
89. कुकरौ की पुछँण भाऊँ शौ साल राखिया फुकणेंदी (भावार्थः कुछ लोग इतने मूर्ख होते हैं कि उनके व्यवहार में बदलाव हीं नहीं आ सकता चाहे उन्हें साधु तपस्वीयों के झुण्ड के बीच में रखा जाए)
90. हींयं मुँझ को हगिऐं जट मिलं (भावार्थः सच्चाई से पर्दा जल्दी उठ जाता है)
91. जीयंणं अखो मरनं सुखो (भावार्थः जीना कठिन और मरना आसान होता है, क्योंकि जो व्यक्ति जीना चाहता है उसे मेहनत करनी पड़ती है और जो व्यक्ति मरना चाहता है उसके लिए सौ द्वार खुले होते हैं)
92. जै बाघ पुंढा फिरला त बाकरी मिल हीं जाअं (भावार्थः प्रयास करने से सफलता मिल ही जाती है) (निराश होकर नहीं बैठना चाहिए)
93. बाँठीण सेई हं जो घर बसावं (भावार्थः मनुष्य अच्छे कार्य करने से महान बनता है, अपनी सुन्दरता से नहीं)
94. मोढ़ सैजा हं जो गम खाअं (भावार्थः बिना ताकत के क्रोध बर्दाश्त नहीं हो सकता)
95. रिश्तेदारी टकौरिया पुंढ की हों (भावार्थः लेन देन और अन्य प्रकार के व्यवसाय में दोस्ती और रिश्तेदारी आड़े नहीं आ सकती)
96. जाण ना पंछीयाँण राम राम सोगिया (भावार्थः उस आदमी की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाना जिसे आपने पहले कभी देखा ही न हो)
97. ध्याँण भांणजै राकस भी छोडी दैअं (भावार्थः अपनों को सताने वाले व्यक्ति के लिए)
98. खाणं की सार सभियांऐं झाणं (भावार्थः भोजन करने की तरकीब सब जानते हैं, बकरी का बच्चा पैदा होने के तुरन्त बाद दूध पीने लगता है, जबकि इससे पहले उसने कभी दूध पिया हीं नहीं था, ये दुनियाँ के सभी जीवों को प्रकृति का दिया वरदान है)
99. जुंघा दाढ़ी मरदौ को गइंणा हों (भावार्थः दाढ़ी, मूछ मर्द के सौन्दर्य में चार चाँद लगाती है)
100. बलै दुई बक्तै चूल सभियांऐं ओझावं (भावार्थः दो वक्त की रोटी सबको नसीब होती है, चाहे कोई कितना ही गरीब क्यों न हो) (ऐसा तब सम्भव है अगर आप प्रयत्न करेंगे)
101. टांग राखी फैराई (भावार्थः अपने क्षेत्र में धाक जमाना)
102. शाँठी करी कूण मरा (भावार्थः काम करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है क्योंकि कर्म ही योग है और आलसी व्यक्ति को बीमारी घेर लेती है)
103. पातड़ी बलै छाश पाणी ना खांईं (भावार्थः उस व्यक्ति का दुविधा में पड़ना जो पहले से ही निराश और लाचार है)
104. जेशोईं बाजं तेशोईं पड़ नाचनं (भावार्थः परिस्थितियों से तालमेल बिठाना चाहिए क्योंकि ये खुश रहने का एक मात्र उपाय है)
105. आपड़े मंगायांदो जीऊ समैरूईं ना (भावार्थः अपने स्वार्थ के लिए सिफारिश करना अच्छा नहीं लगता)
106. जीभा कै बाबा को का जावं (झूठ बोलना या बकवास करना) (इस कहावत को लोग तब कहते हैं जब उन्हें लगता है कि सामने वाला झूठ बोल रहा है)
107. दाई कै साथ की बलै मोढ़ाई और सोगै कै साथ का सोकारा कधी ना हंईं (भावार्थः अपनों से बैर रखना या रिश्तेदारों से जमीन जायदाद की तुलना करना)
108. बाठी की बलै मत और अणुईं की मीठियाई (भावार्थः बुजुर्गों द्वारा दिये गए उपदेश हमें कभी नहीं भूलने चाहिए) (जो लोग बुजुर्गों के आज्ञा का पालन नहीं करते हैं उन्हें एक दिन पछताना पड़ता है)
109. बांदरूक भांग कधी ना हंईं (भावार्थः बच्चों या अनजान लोगों के हाथ में ऐसी वस्तु थमा देना जिसका उन्हें ज्ञान ही न हो)
110. ऐखलै बूट भी चांईं ना (भावार्थः अकेला इंसान कुछ नहीं कर सकता हर व्यक्ति को सहारे की जरूरत होती है)
111. बेटी छूटं पर रोटी ना छूटीं (भावार्थः सांसारिक रिश्ते टूट जाने के बाद भी लोगों के आध्यात्मिक रिश्ते नहीं टूटते)
112. सोगा आपुसै नीचा चांईं (भावार्थः कुछ विद्वान मानते हैं कि जिस परिवार से आप पत्नी या बहू लाते हैं उस परिवार की हैसियत आपके परिवार से ज्यादा नहीं होनी चाहिए)
113. सच्चाई की जड़ पाथरच भी हरी रों (भावार्थः सच्चाई की हमेशा जीत होती है)
114. टिकराणी पांढा भी दाग हों (भावार्थः ऐसी कोई वस्तु या इंसान नहीं होता जिसमें कुछ कमी न हो)
115. किछ त गिहुँ शिलै किछ घरट ढिलै (भावार्थः किसी इंसान का हर प्रकार से असंतुलित हो जाना)
116. जांदी ना बातीया कांणी (भावार्थः जो लोग अपने घरों से बहुत कम बाहर निकलते हैं)
117. जिंणै खैलै बलै ताश तिंणै करा घरौ का नाश (भावार्थः जुआ खेलने से कई परिवार बर्बाद हो चुके हैं जुए की जीत बुरी होती है हार नहीं, क्योंकि जीतने के बाद महत्वाकांक्षा बढ़ती हीं जाती है)
118. हाथी घोड़े बलै मरी नठै गधीक मिला राज (बुद्धिहीन को जिम्मेदारी निभाने का मौका मिलना)
119. मौह बैतावं खईदा चटावं (भावार्थः चालाक और शातिर दिमाग वाले इंसान के लिए) (ये कहावत सिर्फ चतुर इंसान से सम्बन्धित है साधारण लोगों से इस कहावत का कोई सम्बन्ध नहीं है)
120. कुकरू का पाऊँणा रा हई (लज्जित होना) (जहाँ मनुष्य के विचारों और व्यक्तित्व की कदर न हो वहाँ उसे नहीं जाना चाहिए, चाहे किसी ने निमन्त्रण ही क्यों न दिया हो)
121. कांडा आगैईं हं पईंना (भावार्थः होनहार बच्चे की पहचान बचपन में हीं हो जाती है)

122. भोड़ी का भगवान हों (भावार्थः सच्चे इंसान के हृदय में ईश्वर निवास करते हैं, ऐसे लोगों को ठगना या बहलाना सबसे बड़ा पाप है) (सच्चे लोगों की प्रत्येक जगह प्रशंसा की जाती है क्योंकि सच्चाई के बल पर जीना कठिन होता है)
123. एक बाच लिकू की भी देईऐं ना (भावार्थः जब आप किसी व्यक्ति की सिर्फ एक बार हीं मदद करते हैं)
124. राखा ना खाई पुराणा कोदं (जब कोई व्यक्ति आपको धमकी देता है तो ये कहावत आप उस व्यक्ति को सुना सकते हैं)
125. बलै श्यावी को घू लागो पूजनंक तब ढौरी पुंढी बेठी (भावार्थः सबसे गंवार व्यक्ति के पास जब आप फरियाद फरमाते हैं तो उस आदमी के पांव जमीन पर नहीं टिक पाते, और आपकी फरियाद ठुकराना उसके लिए गर्व का विषय बन जाता है) (जो व्यक्ति किसी क्रम में ही न हो जब लोग ऐसे व्यक्ति के पास किसी काम के लिए जाते हैं तो उस व्यक्ति के नखरे बढ़ जाते हैं) (किसी भी स्तर के लोग हमारे काम आ सकते हैं)
126. बलै हई रोइ मूशी की पंचायत (भावार्थः डरपोक और मूर्ख लोगों का इकट्ठा होना) (इस कहावत से सिर्फ लोगों का मजाक बनाया जाता है, पंचायत या सभा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है)
127. बलै खाणं पीणं का हं लाड धाणी का हंईं ना (भावार्थः अगर आपको खाने पीने की कमी नहीं है तो काम से जी नही चुराना चाहिए)मुंडौ पांदै बाल ना आथीं हाडुइ पांढी खाल ना आथीं (वृद्ध व्यक्ति के लिए)
128. लोग घरटौ पुंढी भी रात काटं (भावार्थः घराट में रात गुजारना सबसे कठिन होता है लेकिन मुसीबत में लोग वहाँ भी रात गुजार लेते हैं)
129. बलै तु का टोटूवै था (भावार्थः कुछ दशक पहले जौनसार में इससे कठिन और कोई परिश्रम नहीं था)
130. कीड़े मासंदै पड़े हाडुइंदै पड़ी ना (भावार्थः माता पिता के कुकर्मों का फल संतान भोगती है)
131. बलै बेठी करी काइ शाँठी करी उछाणं (भावार्थः कुछ करने से ही किस्मत बदल सकती है, निराश होकर नहीं बैठना चाहिए) (प्रत्येक व्यक्ति को समाधान का हिस्सा बनना चाहिए)
132. अबड़ी टाड़ी करी भी हं प (भावार्थः सावधानी बरतने से दुर्घटना टल सकती है)
133. शींगू पांढी लेइंऐं माटी (भावार्थः हर वक्त लड़ाई के लिए तैयार रहना)
134. तैरै भी ठिपिऐं प थौला (भावार्थः छोटी सी बात पर नाराज होकर घर से भाग जाना) (इस तरह के लोगों के साथ दिन गुजारना आसान नहीं होता)
135. रोइ ना पड़ी शौरू (भावार्थः हिम्मत हारने वाले का हौसला बढ़ाना) (आश्वासन देने से निराश व्यक्ति का हौसला बढ़ता है) (निराश व्यक्ति का साथ देना इंसानियत की पहचान है)
136. कम खाणा और गम खाणा सबसै आछा हों (भावार्थः ज्यादा लालच नही करना चाहिए, और छोटी छोटी बातों पर लड़ाई करना भी बुरी बात है)
137. श्याई करी खाला त जीभ ना जंदी (भावार्थः जो लोग सोच समझकर और धैर्य से काम लेते हैं उनको कभी असफलता का सामना नहीं करना पड़ता) (किसी के जवाब की प्रतीक्षा करना भी इस कहावत का एक उदाहरण है)
138. आपड़ो बिशकण जागिऐं लोगारै कुकदै ना मारिऐं (भावार्थः अपनी नाकामयाबी का क्रोध दूसरों पर नहीं उतारना चाहिए)
139. गधा चमासै का जाऊं माड़ा (संतोष न रखने वाला इंसान कभी पनप नहीं पाता क्योंकि उसे जितनी ही सुविधा दी जाएगी उतना ही उसके मन में असंतोष बढ़ता जाएगा)
140. गणी करी बलै दोष और खणी करी ढोक मिल हीं जाअं (जाँच पड़ताल करने के बाद कुछ न कुछ मिल ही जाता है)
141. बात करं दिल्ली की पूँछ पाकड़ बिल्ली की (काम छोटा और बातें बड़ी करना या कथनी और करनी में अन्तर)
142. जिनुक डागी ना खाईं सो धारूबै जाअं ललियावंदै (आ बैल मुझे मार या स्वयं समस्या उत्पन्न करना)
143. जिमराजै कै भाग अ (शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति जब किसी भी काम में भाग नहीं लेता)
144. बाबा बिना बलै मती और बैटै बिना गती कधी ना हंईं (बाप की सलाह के बिना किये गये कार्य खतरे से खाली नहीं होते क्योंकि जिस प्रकार पिता के दाह संस्कार में पुत्र की भूमिका बढ़ जाती है उसी प्रकार पिता के रहते पुत्र को प्रत्येक काम को करने से पहले उनकी सलाह लेनी चाहिए क्योंकि पिता पुत्र का रिश्ता एक दूसरे के सहयोग के लिए बना है)
145. जब ईजी मरं तब एक बार दुसा भी इनियारो पड़ (माँ से बेहतर दुनियाँ में दूसरा कोई शुभचिन्तक नहीं होता इसलिए माँ की मृत्यु का दुख दुनियाँ का सबसे बड़ा दुख माना गया है) (माँ की सेवा करने वाला इंसान अपने जीवन में कभी दुखी और असफल नहीं होता)कचलै के साथ आछा भी डूबं (बुरे आदमी का साथ देने से अच्छा इंसान भी बुरा बन जाता है)
146. माड़ै भागूंदो बात रै पाणी हों (कंगाली में आटा गीला)
147. माड़ै देखी बलै पड़िऐं ना मोटै देखी डरिऐं ना (किसी व्यक्ति की कमजोरी का लाभ नहीं उठाना चाहिए क्योंकि वही कमजोरी आपके लिए घातक साबित भी हो सकती है, और किसी व्यक्ति की ताकत से भी नहीं डरना चाहिए क्योंकि डर के आगे जीत है)
148. जिंगै करी बलै धीर तिंणै खाई खीर (धैर्यवान इंसान हमेशा सुखी रहता है)
149. मुंडौ की बलै लिशाई और घरटौ की पिशाई देणीं पड़ (मेहनत का फल हर इंसान को मिलना चाहिए)
150. का बलै ऐजै लूटिऐं और बॉटिऐं (परिवार का बंट जाना परिवार का लूट जाने जैसा होता)
151. तैरा भी डर हीं डर अ फुटिऐं बंदूका का शा (छोटी सी बात पर लड़ाई करने वाला व्यक्ति)
152. कि दाई आअं कामैं कि भाई (पास पड़ोस के लोगों से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने चाहिए क्योंकि मुसीबत में नजदीक के लोग सबसे पहले मदद के लिए हाथ बढ़ाते हैं)
153. एशो हंईं ना जै रूठो नु मनाईलो और टूटो नु सीबिलो (नाराज व्यक्ति को मनाना और टूटी वस्तु को जोड़ना इंसान का कर्त्तव्य है)
154. मरी करी आँईं ना पछीं (मृत्यु के बाद इंसान वापस नहीं आ सकता इसलिए अपने जीवन में अच्छे कार्य करने चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने चाहिए) (ये कहावत हमें बीमार और बुजुर्गों की सेवा करने की सीख भी देती है)आघलीं बलै छाडी मुँह दी लागी (प्रथम प्रयास में हीं असफल हो जाना, या बुरी तरह से असफल हो जाना)
155. कंठ बिना बलै राग और नुणं बिना शाग कधी ना हंईं (बिना नमक के दाल या सब्जी बनाना सम्भव नहीं है इसी प्रकार बिना सुरीली आवाज के किसी संगीत की महफिल को सजाना भी असम्भव है)
156. आई बलै मूछ पड़ी सूँच आई बलै दाढ़ी बात बिगाड़ी (उम्र बढ़ने के साथ चिन्ता भी बढ़ जाती है क्योंकि व्यक्ति के उपर नौकरी शादी और परिवार की जिम्मेदारी का भार बढ़ जाता है)
157. नठी रा जौंरी मुँझ (जिस इंसान का दिमाग काम करना बन्द कर देता है)
158. तेसकीं बलै काखड़ी खाई तेसकेंईं मुंडै लाकड़ी लाई (जिस व्यक्ति के साथ अत्याचार हुआ है उसी व्यक्ति को सजा देना)

(इस कहावत का उदाहरण किसी न्यायालय के फैसले से सम्बन्ध नहीं रखता)

159. बलै कि झालै कै बाटा लागिऐं कि झालैक लाईऐं आपड़ै बाटा (इंसान की मानसिक हालत को देखकर फैसला लेना) (ये कहावत बीच का रास्ता निकालने की सीख देती है)
160. जो गठण हाथौ लेई फूचं सेई दाँदु लेइं काइ खोलनी (जो काम आसानी से हो सकता है उस पर ज्यादा ऊर्जा व्यय नहीं करनी चाहिए)
161. बिना धूणाः बाकरा भी पड़ी ना काटना (बिना सूचना दिये आप किसी के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर सकते हैं, विशेषकर जौनसार में) (राजनीति की आड़ लेकर कुछ लोग संस्कृति को मिटा रहे हैं)
162. ईजा के सब हं प्यारै (मॉ सभी बच्चों से एक समान प्यार करती है चाहे कोई सुन्दर हो या बदसूरत) (माँ के दूध का कर्ज कोई नहीं चुका सकता)
163. कड़वै का कुमौटा भी ढूंगुईं ना गुइंगै की जड़िया भी खाई मारं (क्रोधी व्यक्ति से सब लोग दूर रहते हैं जबकि सज्जन इंसान को चुना लगाने के चक्कर में प्रत्येक व्यक्ति रहता है)
164. सस्ता बलै हींग लेमड़ै वारि खाओ (मुफ्त में मिली किसी महँगी वस्तु का नाजायज उपयोग करना)
165. गूंणी बोलं बोधक तेरी पुढूँण लॉबी (खुद को दूध का धुला कहकर दूसरों की निन्दा करना)
166. तैरै भी गाईंऐं प रो चलकुड़िया को शो बिशू (उस काम का न होना जिसके लिए आपने कई सालों से रट लगा रखी है) (अगर आप दो या तीन साल से जमीन खरीदने की बात कर रहे हैं और जमीन आप आज भी नहीं खरीद पाये हैं तो आप इस कहावत का हिस्सा बन जाएंगे)
167. छाश और झगड़े भाऊँ कोइछेई बढ़ाओ (लड़ाई करने की कोई सीमा नहीं होती आप छोटी छोटी बातों पर रोज लड़ाई बना सकते हैं इसी प्रकार छाछ में पानी डालने से उसकी मात्रा बढ़ाई जा सकती है)
168. ओकै बणै बलै जनरल कर्नल तु रा घोरा कै घोरा हीं (पढ़ाई लिखाई छोड़कर लोगों को डराने धमकाने का काम करना)
169. भरी बलै भिराया मूशै ना मारीं (अगर लोग ज्यादा संख्या में हो, तो काम कम और शोर ज्यादा करेंगे)
170. भैड जो नाची प मैंगणा भी नाचा (गलत आदमी की मदद करके खुद को गलत साबित कर देना) (किसी की हाँ में हाँ मिलाना)
171. गलती का बाबा डांड हों (गलती करने का एक हीं परिणाम होता है, सजा भुगतना, अगर आपने गलती से किसी व्यक्ति को गाड़ी के नीचे कुचल दिया है तो आप सजा भुगत सकते हैं लेकिन उस व्यक्ति को आप जीवित नहीं कर सकते, जौनसार में माफी मांगने पर हर गलती को माफ किया जाता है क्योंकि यहाँ के लोगों के हृदय दया से भरे हुये हैं)
172. बलै आपड़ो मोल भी साथेईं बोलो (किसी चीज की ज्यादा कीमत बता देना) (ये कहावत विशेषकर उस समय सुनने को मिलती है जब आप किसी पालतू जानवर को बेचते हैं)
173. ऐजै हाडूवै कि चाढ़नंक हं कि भाढ़नक (जब तक जीवन है तब तक मेहनत करते रहो क्योंकि उसके बाद इस शरीर ने जलकर राख हो जाना है) (कर्म करो कर्मफल की चिन्ता मत करो)
174. रात बलै हांढा ना भूत मिला ना (जिस व्यक्ती को काम करने का अनुभव न हो)
175. लाड़कटी को जाडो पाथरच हों (खेलते समय बच्चों को सर्दी का एहसास नहीं होता) (इस कहावत का जन्म एक कहानी से हुआ है)
176. एक शाटांदा बूट भी कटिना (एक बार प्रयास करने से अगर सफलता नहीं मिलती तो दुबारा प्रयास करना चाहिए, ये कहावत किसी वस्तु या पालतू जानवर को खरीदने से भी सम्बन्धित है (सिर्फ खरीदने वाला कह सकता है)
177. बोलदै बोलदै बलै खोटो और काटदै काटदै छोटो (किसी चीज के बारे में ज्यादा नहीं सोचना चाहिए)
178. अबड़ी का टड़िऐं शौ बरीष जीयं (एक बार मौत के मुँह से बचकर निकलने का मतलब है कि आप लम्बी उम्र के मेहमान है)
179. बिनाशी बिनाशी करी नेठी (किसी चीज को धीरे धीरे करके समाप्त कर देना)
180. बलै ना आपक ना बापक (स्पष्ट सोच रखने वाला व्यक्ति) (ये कहावत निर्दयी व्यक्ति से भी सम्बन्धित है)बलै का लाई एजी रामा रूमी रै धामा धुमी (पंचायत के लोगों को दिया जाने वाला भोजन जो किसी विवाद को सुलझाने के लिए सामूहिक आँगन में डेरा डाले हुए हैं)
181. जातर और बातर दुई दुस की हों (ये कहावत हमें समय से फसल बोने की सीख देती है)
182. बाकरै को रोटाड़िच नेया रोटाड़ी को बाकरैच नु लेया (किसी काम को बढ़ा चढ़ाकर नहीं करना चाहिए बल्कि प्रत्येक काम को कम समय और कम लागत में पूरा करना चाहिए) पंच और परमेश्वर एक हों (कानून किसी के साथ भेद भाव नहीं करता)
183. बलै हाऊँ भी राणी तु भी राणी ऐबै कूण कुठौं एजी कावंणियाँ की घाणी (खुद को किसी से कम न समझना)
184. पईसी लेई बलै टकटका बिना पईसी का जकजका (अगर जेब में पैसा है तो इंसान सारे गम भूल जाता है, अगर आप बेरोजगार हैं तो आपसे ज्यादा दुखी कोई नहीं हो सकता) (सिर्फ इमानदारी को छोड़कर बाकी सब पैसे से खरीदा जा सकता है)
185. भीत बलै ढौणी भितंडाई पड़ी (अपने ही परिवार वालों के साथ गद्दारी करना)
186. बलै तेईकक पाथर प राखा पल्टी (किसी जगह कभी न जाने की प्रतिज्ञा करना)
187. मौसं खाई करी और तमासी लाई करी कधी ना अघांईं (इन दो चीजों से इंसान कभी संतुष्ट नहीं हो सकता)
188. पाणी पांढी प रोइ लागी आग (जब समाज के जागरूक लोग अन्याय करते है)
189. मोरछोत बलै मित्र मुँझ हं सुतकोड़ सुतौ भितोड़ी (ये कहावत जन्म और मृत्यु से सम्बन्धित है जिसका उदाहरण हम विस्तार से नहीं लिख सकते) (सुतकोड़... का मतलब प्रसव के समय निकलने वाला खून)
190. सोगा बरतंणक हं चरजंणक हंईं ना (रिश्तेदार परिवार का सदस्य माना जाता है इसलिए रिश्तेदारी में किसी प्रकार की रंजिश नहीं होनी चाहिए)
191. कील प लागी (ऐसी बात कह देना जिसका जवाब देने की किसी में हिम्मत ही न हो) (जिस बात में सच्चाई और दम हो उस बात का जवाब देने के लिए दस बार सोचना पड़ता है)
192. जो ठगड़ी हं सो ओढारौ पुंढ कै भी भण्डारौ पुंढे लैअं (अगर लड़की के अन्दर अच्छे संस्कार हो तो झोंपड़ी को महल बनाना असम्भव नहीं)बलै तु भी तु अ हाऊँ भी हाऊँ (कट्टर स्वभाव के लोग जो किसी की गुलामी करना पसंद नहीं करते) (तू डाल डालती है कापात
193. जेइछै बणंदै चलकुड़ै बाशं तेइछै कूण कनियावं (बेकार की बातों पर ध्यान न देना)
194. अनाणिक रा पड़ी (प्रसिद्ध व्यक्ति जिसे जीवन के हर मोड़ पर याद किया जाता हो) (इंसान बुरे काम के लिए भी प्रसिद्ध हो सकता है क्योंकि प्रसिद्ध या मशहूर व्यक्ति उसे कहते हैं जो हमेशा चर्चा में बना रहे या उसके जैसा कोई

दूसरा न हो, जैसे गाँधी, हिटलर, लादेन, आइंस्टीन, लिंकन, सुभाष चन्द्र बोस आदि, ये कुछ अच्छे नाम हैं और कुछ बुरे लेकिन ये सारे नाम मशहूर हैं)

195. जो भरी सुचं खाणं सो मुणि ना खाईं (ज्यादा प्राप्त करने के चक्कर में कभी इंसान खाली रह जाता है)शींगू का त खुर्ला खुरू का पईंना (सामने प्रशंसा और पीठ के पीछे बुराई करने वाला व्यक्ति)
196. धोखे से आछा धाका अ (धोखा देने से अच्छा है कि आप पहले ही मदद करने से मना कर दें)
197. दाता का हाथ कूण शकं रोकी (दान करने वाले व्यक्ति को कोई नहीं रोक सकता)
198. भरी बलै रीखक थी लागी श्यावी कै (पी.सी.एस की तैयारी करने वाला व्यक्ति अगर चपरासी बनता है)
199. जेथु पुंढे बलै चार मोढ़ तेथु पुंढा पाप ना कोढ़ (जिस परिवार में पुरुषों की संख्या अधिक हो उस परिवार को किसी बात की चिन्ता नहीं होती)
200. भिराई शौ मूशी खाई करी जाअं हरिद्वार नोउंदी (हजारों अपराध करने के बाद योगी बनना) (महर्षि वाल्मीकि से इस कहावत का कोई सम्बन्ध नहीं है) (अगर कोई सुधरना चाहता है तो अच्छी बात है)
201. बलै दैर हं पर अंधेर ना हंईं (प्रतीक्षा करने से नुकसान नहीं लाभ होता है)
202. जो गन्ना ना देई सो भैल दैअं (जो व्यक्ति अपने हाथ से किसी को पानी तक नहीं पिला सकता उसे एक दिन बहुत कुछ देना पड़ सकता है)
203. भरी कर्जे की बलै लाज और भरी जूँ की खाज कधी ना हंईं (भारी कर्ज के नीचे दब जाने के बाद इंसान कर्ज चुकाने की इच्छा अपने मन से निकाल देता है)
204. जो मरला सो का नु करला (मौत से बचने के लिए इंसान कुछ भी कर सकता है चाहे उसे किसी की जान लेनी पड़े)तेईकेंईं बलै भूतौ की मर्थी तेईकेंईं लाड़कटी का खैल (जिस जगह चौबीस घण्टे खतरा बना रहता है)
205. एक कोवै कै नेउंदा ना दुई कोवी भैरक पूरा ना आथीं (जो व्यक्ति शारीरिक रूप से अत्यधिक कमजोर हो)
206. रौण मौण मरदु को हों (भीड़ वाली जगह पर महिलाओं और छोटे बच्चों को नहीं जाना चाहिए)
207. भगवानं भेरी लै खैलाई ठोउदै (किसी महान व्यक्ति से तुच्छ कार्य करवाना)
208. आदमी सा जो खाई करी पस्ताणा (इंसान को हर काम में भाग लेना चाहिए क्योंकि निराश होकर बैठने से अच्छा है कि प्रयत्न करते रहे) (जब तक हम किसी काम को कर नहीं लेते तब तक हमारे मन में जिज्ञासा बनी रहती है)
209. बलै शूरी पुंढ को खेल्टो आँगणेई पुंढो आअं (किसी के खिलाफ की गई साजिश का पर्दाफाश हो हीं जाता है)
210. बलै लाई राखा छारू का टीका (सुबह से लेकर शाम तक झूठ बोलना) (कुछ लोग दूसरों को खुश करने के लिए भी झूठ बोलते हैं)
211. छाडं बलै गईंणिक पहुँची ना छईंणिक (लम्बी योजना बनाना लेकिन हमेशा असफलता का मुँह देखना)
212. बलै भितरै हं मैल त गाँव डरों गाँव की हं मैल त खत डरं (परिवार में एकता हो तो पूरा गाँव उस परिवार से डरता है अगर पूरा गाँव एकता के सूत्र में बँधा हो तो पूरा क्षेत्र उस गाँव से डरता है) (परिवार में एकता का अभाव नही होना चाहिए)
213. सीधै गुठिया लेई आँईं ना घीउ (अगर कोई व्यक्ति समझाने से नहीं मानता है तो उस व्यक्ति के साथ कठोर व्यवहार करना चाहिए)
214. राखै ना घुंडै चूशी(अगर कोई आपको मारने की धमकी देता है तो आप तुरन्त इस कहावत के माध्यम से जवाब दें)
215. जिंणै करी बलै शरम तेसकै फूटै करम (कुछ लोग पढ़ने लिखने के बाद मजदूरी करने में शर्म महसूस करते हैं किसी भी इंसान को ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य को हाथ पांव काम करने के लिए दिये हैं) (दुनियाँ में जितने भी बड़े आविष्कार हुए हैं वो सब गरीब और साधारण लोगों ने किये हैं किसी सरकारी कर्मचारी या अमीर व्यक्ति ने नहीं, इसलिए अगर आपको आगे बढ़ना है तो छोटा से छोटा काम भी कर लेना चाहिए)बलै आपड़ी पांढी हं जबरी भी (अपने यार दोस्तों से हम जबरन भी मांग सकते हैं जैसे कपड़े, पैसे, भोजन आदि)
216. सीधा प रा बेठी अंगारूच (बिल्कुल सफेद झूठ बोलना)
217. ओकै बलै नाज खाअं ताऊँखै नाजऐं खा (रोज पौष्टिक भोजन करने के बाद भी कमजोर रहना)
218. एक टांगाच लागी नाची (रिश्ता हो जाने के बाद लड़की का प्रसन्न होना)
219. खांदा हराम को (बाप के रहते पुत्र को किसी बात की चिन्ता नहीं होती)
220. आपु झाणी ना ओरूकी शुणी ना (जो व्यक्ति खुद अनजान होते हुए भी दूसरों से सलाह नहीं लेता)
221. बलै तींदै हाथ ओरू पांढै घुशिऐं (आरोप से बचना चाहिए चाहे अपराध आपने हीं किया हो)
222. मरदौ का रै बाघौ का डैरा (भावार्थः मर्द को कहीं भी रूकना या जाना पड़ सकता है इसलिए समय पर भोजन और स्नान कर लेना चाहिए)
223. किमोढ़ी पांढी मरनंक लागं पाँखा (भावार्थः बुढ़ापे में बच्चों जैसी हरकतें करना या मुसीबत के मुँह में जाना (बुढ़ापे में फैशन करना भी इस कहावत का एक उदाहरण है) (इस कहावत के बहुत से उदाहरण हैं)
224. आपड़ी आपड़ी प फेंछुई की शी (भावार्थः अपनी हर चीज अलग रखना या सामूहिक परिवार में न रहना) (इस कहावत का जन्म एक कहानी से हुआ है जो एक पक्षी पर आधारित है)
225. आथीं ना टाँटै पाणी का नाहिंऐं (भावार्थः सबसे बड़ा बेईमान जिसे कोई ठग नहीं सकता)
226. लांगु लेई बलै घास परनावी लेइं पाणी (भावार्थः किसी चीज का अधिक मात्रा में होना या किसी के पास बेहिसाब सम्पत्ति का होना) (मोटी कमाई भी इस कहावत का एक उदाहरण है)
227. लालचा आपड़े चीजाच करिऐं (भावार्थः दूसरों की सम्पत्ति हड़पने की कोशिश नहीं करनी चाहिए)
228. आपुईं लाई खुराड़ी गोडैदी (भावार्थः अपनी जिन्दगी खुद बर्बाद करना)
229. बलै गूतुंदी मुंडी पाई राखी ऐबै मुसैंक रणं डरी (भावार्थः जब खतरों से निपटने के लिए मन बना लिया है फिर अंजाम जो भी हो उससे नहीं डरना चाहिए) (इस कहावत के और भी कई उदाहरण हैं)
230. तैरै का समुन्द्रे लागं आड़ो (भावार्थः जिस व्यक्ति के पास बेहिसाब धन दौलत हो)
231. बाँठीण हली तब का सूनं झड़दो (भावार्थः इस कहावत के माध्यम से सुन्दरता की प्रशंसा करने वाले व्यक्ति को जवाब दिया जाता है)
232. पाथरी की रैख अ (भावार्थः अपनी बात पर अडिग रहना, ऐसे लोग स्वार्थी नहीं होते)
233. एखडु करं बेखडु की सौरी फाव मारं आधै लौहरी (भावार्थः ऐसे व्यक्ति की बराबरी करने की कोशिश करना जिसकी हैसियत के इर्दगिर्द आप भटक भी नहीं सकते हैं) (इस

आदत से हमें बचना चाहिए) (अगर कोई दस लाख की गाड़ी खरीद रहा है तो आप उस व्यक्ति का अनुसरण मत कीजिये)

निष्कर्ष

उपरोक्त शोध के आधार पर कहा जा सकता है कि जौनसार का साहित्य संपन्न था किन्तु आधुनिकता की दौड़ में यह भाषा विलुप्तीकरण के कगार पर खडी है उपरोक्त अनाउ.ो को नयी पीढ़ी के लोग बोलना तो दूर इनका अर्थ तक नहीं समझते हैं कुछ बुजुर्ग लोग ही इनको बोलना व इनका अर्थ जानते हैं इसीलिए इन अनाउ.ो का संरक्षण करना भी अति आवश्यक है जिससे इस भाषा को आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित किया जा सके

सन्दर्भ सूची

1. A linguistic study of jaunsari- Dr- Satish (1990) creative publisher New Delhi-
2. Jaunsari dictionary & जम जे & Dr- Satish (2000) Hindi Bhavan Dumgaun Dehradun –
3. गढ़वाली भाषा एवं उसका साहित्य. डॉ. हरिवत्त भटट शलेष १६७६ उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान (हिन्दी सीमिति प्रभाग महात्मा गांधी मार्ग लखनऊ)
4. कुमाउँनी भाषा एवं उसका साहित्य – डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय
5. कश्मीरी भाषा एवं उसका साहित्य–डॉ० शिवन कृष्ण रैण (1972) सम्मार्ग प्रभाग 16 यू० बी० बैंग्लोरोड़ –7
6. जौनसारी–बावरी ज्योतिष ग्रंथ – बागोई–हस्तलिपिबद्ध –अज्ञात
7. जौनसारी–बावरी ज्योतिष ग्रंथ–साँचे–हस्तलिपिवद्ध –अज्ञात
8. जौनसारी–बावरी पण्डवाणी ज्योतिष ग्रन्थ– हस्त लिपिबद्ध–अज्ञात
9. जौनसार–बाबर संक्षिप्त परिचय– के0आर. जोशी
10. जनश्रुतियों के अनुसार. रतन सिंह जौनसारी के अनुसार, डॉ0 उमाशंकर सतीश के अनुसार, शंकरदत्त उनियाल के अनुसार, देविका चौहान के अनुसार, श्याम दत्त जोशी के अनुसार, श्रीमती बरोदेवी के अनुसार, सेमानी देवी के अनुसार, जगतराम शर्मा के अनुसार, रतिराम शर्मा के अनुसा, नारो देवी के अनुसार, मुन्ना सिंह चौहान के अनुसार, लुइया पण्डित के अनुसार, भजराम शर्मा के अनुसार, एम. आर. सेमवाल आदि के अनुसार
11. जौनसार–बावर का सांस्कृतिक वृहद अध्ययन – रतन सिहं जौनसारी।